

GULAB

ज़िन्दगी और रिश्तों को ताना बाना
विकास बंसल द्वारा

GULAB SIKHAB



रंग बिरंगे वस्त्र करेगी गलाबो जब धारण
खुशी उसकी सिताबो कौं जलन का कारण

हँसी खुशी के बीच आगे बढ़ेगी ये कहानी
मज़ेदार इतनी की दिया जाएगा उदाहरण

बात बात में जब लगेगी झड़ी लतीफो की
असर दिलों पर और दिमांग का होगा हरण

ज़िन्दगी कठपुतली है डोर ऊपर वाले के हाथ
सकूँ के कुछ पल खुशनुमा होगा वातावरण

नवाबों का शहर है लखनऊ तो बात नवाबी
खुशियों की नदी लगेगा दुखो को अब ग्रहण

गुलाबो सिताबो की पूरी टीम को
बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM



GULAB SITAB

ज़िन्दगी के हजार रंग एक रंग ये भी है
सुनी बहुत कहानियाँ एक प्रसंग ये भी है

लड़ लड़ कर कैसे गुजरता इनका दिन
सुनी बहुत जंग ग़ज़ब एक जंग ये भी है

ज़बान कितनी लम्बी हो सकती देखना
बेलगाम ज़ुबान उड़ती जैसे पतंग ये भी है

सिफ़र आप ही नहीं हैं परेशान यहाँ पर
ज़िन्दगी से अपनी अपनी तंग ये भी हैं

गुलाबो सिताबो परेशान हैं एक दूसरे से
एक दूसरे से बदले लेने का ढंग ये भी है

रहना साथ सज्जा है, लड़ने में अलग मज्जा है
ज़िन्दगी की कठनाईयों पर व्यंग्य ये भी है

लड़ लड़ कर कैसे गुजरता इनका दिन
सुनी बहुत जंग ग़ज़ब एक जंग ये भी है

ज़िन्दगी के हजार रंग एक रंग ये भी है
सुनी बहुत कहानियाँ एक प्रसंग ये भी है

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



GULAB SIKAB

चुप रहना एक तहजीब है, पर चुप रहता कौन है
 संबको जल्दी पहले आप पहले आप यहाँ कहता कौन है
 अपनों के खिलाफ़ अपने खड़े हैं आज यहाँ पर
 कोई बोलता, कोई सुनता, पता नहीं यहाँ सहता कौन है
 घर बड़े होते जा रहे हैं और घर वाले कम हो गए
 गैरों से प्यार कर रहे, अपनों के साथ यहाँ रहता कौन है
 हिम्मत नहीं की सामने रोएँ वो, छुप छुप कर रोते
 आँखों से शर्म का पानी भी सूख गया यहाँ बहता कौन है
 किस्मे गुलाबो सिताबो के आज घर घर में दिखते
 धूर धूर के देख रहे हैं सब, नज़रों में यहाँ बसता कौन है
 मैं उसके लायक़ नहीं, वो मेरे लायक़ नहीं, कहते वो
 किसके साथ रहें, किसके साथ नहीं, यहाँ जंचता कौन है
 अपनों के खिलाफ़ अपने खड़े हैं आज यहाँ पर
 कोई बोलता, कोई सुनता, पता नहीं यहाँ सहता कौन है
 चुप रहना एक तहजीब है, पर चुप रहता कौन है
 संबको जल्दी पहले आप पहले आप यहाँ कहता कौन है

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत शुभकामनायें।
 - विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM



GULAB SITAB

थोड़ा सा मुस्कुराइए की आप लखनऊ में हैं
लखनऊ शहर अदब, तहजीब और नवाबों का

रोज़ नए नए क्रिस्से, कहानी और झगड़ों का
लखनऊ शहर मशहूर जोड़ी गुलाबो सिताबो का

बातें वो जो बिन बात यहाँ बहुत ज्यादा बड़ती
लेखा जोखा जब खुलता पुराने बहुत हिसाबों का

पढ़ लिखकर भी अनपढ़ हैं जो करती झगड़ा
बेड़ा गर्क कर दिया दोनों ने पढ़ी हुई किताबों का

जीत हार, हार जीत कभी इसकी, कभी उसकी
कभी सिताबो भारी तो कभी पाला भारी गुलाबो का

कहने को स्त्री, नारी पर दोनों एक दूसरे पर भारी
शक्ल, सूरत पर न जाएँ, समय नहीं आफताबों का

रोज़ नए नए क्रिस्से, कहानी और झगड़ों का
लखनऊ शहर मशहूर जोड़ी गुलाबो सिताबो का

थोड़ा सा मुस्कुराइए की आप लखनऊ में हैं
लखनऊ शहर अदब, तहजीब और नवाबों का

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM





लड़ लड़ कर मर जाएगी ये दोनों कोई समझाओ
क्या होती ज़िन्दगी इन दोनों को कोई बतलाओ

यहाँ बहुत मसले ज़िन्दगी के उन्हें तुम हल करो
आज जी लो प्यार से झगड़ा अब तुम कल करो

झगड़े के सिवाए भी बहुत यहाँ पर परेशानियाँ हैं
गुलाबो सिताबो की रोज़ रोज़ नई कहानियाँ हैं

तू मेरी जैसी दिखती मैं तो तेरे जैसा दिखता हूँ
झगड़े की बातें नहीं बातें ज़ज़बात की लिखता हूँ

खाना खाती दोनों बिना झगड़े होता नहीं इन्हें हज़म
गुलाबो सिताबो ने झगड़े के लिए ही लिया है जन्म
साँसें फूल चूकी दोनों की पानी ठड़ां इन्हें कोई पिलाओ

लड़ लड़ कर मर जाएगी ये दोनों कोई समझाओ
क्या होती ज़िन्दगी इन दोनों को कोई बतलाओ

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM



GULAB SITAB

भला इन तूफानों को अब कोई कैसे रोके
ज़िन्दगी में रोज़ आते हैं नोक झाँक के झाँके
खिलाफ़ होकर तो ज़िन्दगी ग़ज़ार दी हमने
ज़िन्दगी को जी कर देखते हैं किसी के होके
मत लगा के बैठ आँख तू मेरी ग़लतियों पर
मुझे नीचा दिखाने के मिलेंगे बहुत बहुत मौके
हँसी ख़ुशी तू भी रह और मुझे भी रहने दे यहाँ
मुझे बता दुख कब कहाँ स्कृते यहाँ किसी के रोके
ग़ैरों पर यक़ी न करें तो किस पर यक़ी करें
अपनों से तो जब भी मिले हैं बस मिले हैं धोखे
किराएदार हैं सब यहाँ पर मालिक तो बस एक
कभी भी बुझा सकते हैं शमां यहाँ हवा के झाँके
खिलाफ़ होकर तो ज़िन्दगी ग़ज़ार दी हमने
ज़िन्दगी को जी कर देखते हैं किसी के होके
भला इन तूफानों को अब कोई कैसे रोके
ज़िन्दगी में रोज़ आते हैं नोक झाँक के झाँके

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



देखा जिसने जमाना बहुत और जानता है जो कल है
चश्मे के पीछे मोटी मोटी आँखें और माथे पर बल है

ये झुर्रियाँ गालों पर उसके, ये सफ्रेद सफ्रेद बाल
तजुरबा बोलता है उसका गुज़ारे जिसने कई साल

झुक गई भले ही कमर पर हौसलों उसके बुलंद हैं
लोगों से मेल न खाती बातें ये ज़िन्दगी का द्वंद्व है

नजर कमजोर है, बदल गई तो नज़रिया बदला है
दुनियाँ साथ चलती उसके जो ज़माने के साथ चला है

चड़ा रखी हैं बोहे बस धूरती रहती हैं सबको निगाहें
बचकर रहना बाबा इनसे बदल सको तो बदल लो राहें

कुछ कर गुज़रने को ये मियाँ आज सबके हैं सामने
करते हर बार कुछ नया लोग लगते दिलों को थामने

सब फ़िज़ूल हैं यहाँ सच कहाँ ये ही ज़िन्दगी असल है
पहुँचे हैं नवाबों के शहर में हो रही वहाँ पर हलचल है

देखा जिसने जमाना बहुत और जानता है जो कल है
चश्मे के पीछे मोटी मोटी आँखें और माथे पर बल है

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM



GULAB SHAB

खुशियों न कर लिया पर्दा, लिए बैठी हैं वो घूँघट
तजुरबा यहाँ हमेशा होता है बुढ़ा और थोड़ा खुसट

नोंक झोंक गलाबो सिताबो की लेती ग़ज़ब मोड़
हँसी मज़ाक के साथ कहानी बढ़ेगी ये अब सरपट

अजीब सा सब्राटा पसरा रहता है आजकल घरों में
मज़ा तब था जब होती रहती थी रिश्तों में खटखट

लड़ाई ज्यादा, बहुत ज्यादा, हद से ज्यादा जब बढ़ जाए
रिश्ते करते शिकायत रिश्तों से लिखवाते हैं वो रपट

ज़स्ती नहीं ख्यालात मिले हैं यहाँ सबके सोच अलग है
माननी चाहीए बातें, मान मेरी, मान मेरी की क्यों लगा रखी है रट
चल रही, चले जा रही है ज़िन्दगी तो मज़े ले ले थोड़े से तू भी
पता नहीं कब आ जाए आवाज़ ऊपर से और दे सुनाई तुझे कट

खुशियाँ न कर लिया पर्दा, लिए बैठी हैं वो घूँघट
तजुरबा यहाँ हमेशा होता है बुढ़ा और थोड़ा खुसट

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM

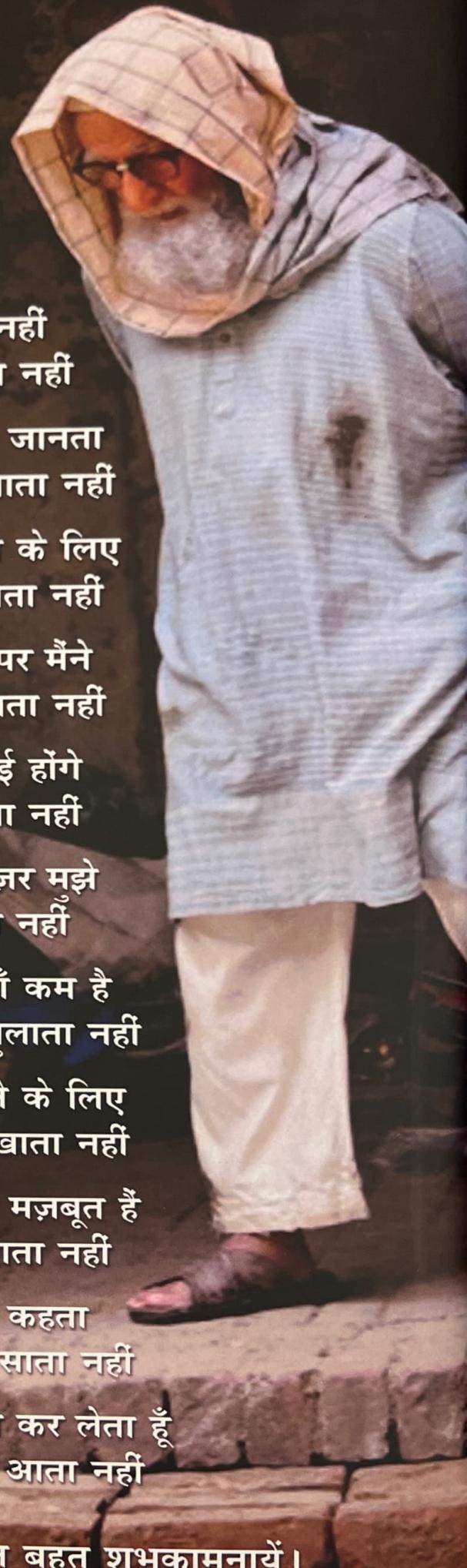


खेल यहाँ रोज़ नया दिखाती हैं गुलाबो सिताबो
ज़िन्दगी के सबक़ सिखाती हैं गुलाबो सिताबो
करते हैं इंतज़ार साल भर मिलने के लिए सब
साल में बस एक बार आती हैं गुलाबो सिताबो
रिश्ते क्या हैं, क्यों हैं, कैसे हैं, कब हैं, कहाँ हैं
रिश्तों की अहमियत बतलाती हैं गुलाबो सिताबो
किस्मे बहुत हैं अलग अलग पहलू ज़िन्दगी के
कहानी हर बार नई सुनाती हैं गुलाबो सिताबो
कहने को तो डोर उनकी भी किसी और के हाथ
बात सही ग़लत तो लड़ जाती हैं गुलाबो सिताबो
डरते हैं हम खुद से मिलने से आइनों से चुराते नज़रें
खुद से हमारी मुलाक़ात करवाती हैं गुलाबो सिताबो
नोक झाँक न हो यहाँ तो ज़िन्दगी का मज़ा नहीं
झगड़े हो जाएँ तो सुलह करवाती हैं गुलाबो सिताबो
खेल यहाँ रोज़ नया दिखाती हैं गुलाबो सिताबो
ज़िन्दगी के सबक़ सिखाती हैं गुलाबो सिताबो
करते हैं इंतज़ार साल भर मिलने के लिए सब
साल में बस एक बार आती हैं गुलाबो सिताबो

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM

GULAB



घुटने मुँडे मुँडे हैं तो क्या मैं लड़खड़ाता नहीं
हमेशा चलता पैदल कोई सवारी ले जाता नहीं

मोटी नाक है मेरी पहचान सबकी करना जानता
खिलाफ़ हूँ मैं बस उसके जो मुझे यहाँ भाता नहीं

कुछ कुछ चुराने निकला हूँ आज ज़िन्दगी के लिए
लम्हों के सिवाए तो कुछ मैं भी यहाँ चुराता नहीं

मोटा मोटा काँच चड़ाया हुआ है आँखों पर मैंने
सोचते हैं ज़माने वाले नज़र मुझे कुछ आता नहीं

लखनऊ की गर्मि से डरने वाले और कोई होंगे
तपती धरती, सूरज निकल के मुझे डराता नहीं

सब की खबर मझे आता है यहाँ सब नज़र मझे
ऐसा कौन सा रिश्ता जो मैं यहाँ निभाता नहीं

बाज़ुओं में अभी दम है, ये उम्रदराज़ कहाँ कम है
करता सब काम अपने खुद किसी को बुलाता नहीं

किताबों तो रख रखी है मैंने मन बहलाने के लिए
ऐसा कौन है जो ज़िन्दगी का सबक़ सिखाता नहीं

पराने हए तो क्या हुआ असूल आज भी मज़बूत हैं
ज़िन्दगी की परेशानियों से मैं कभी घबराता नहीं

कोई मुल्ला जी, बड़े मियाँ, मिर्जा साहब कहता
करते न प्यार मुझसे इतना जो मैं उन्हें हँसाता नहीं

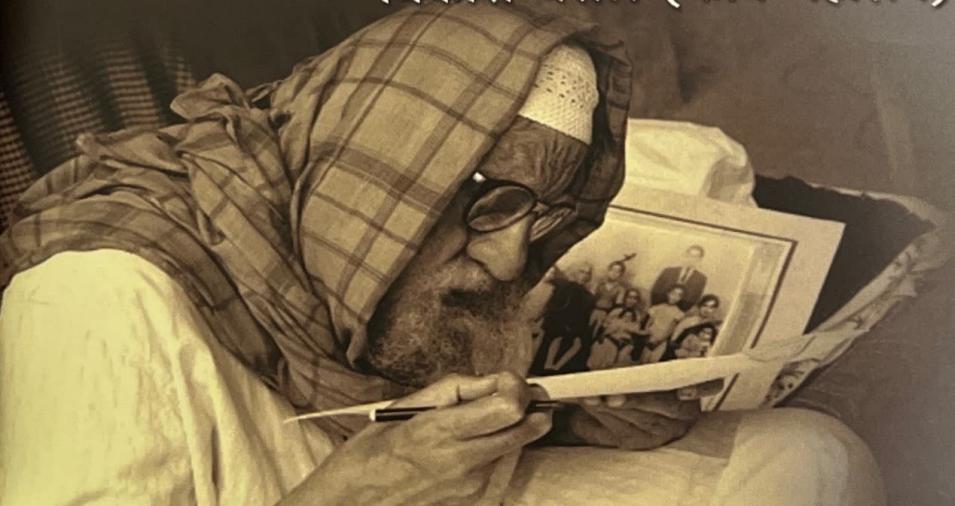
सब के सब काम सबसे पहले मैं खुद ही कर लेता हूँ
तहजीब के साथ पहले आप कहना मुझे आता नहीं

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM

GULAB SKAB

मुख्यातिब होना चाहता हूँ मैं गुस्ताखियों के रिवाज से
बहुत जी चूका हूँ जिन्दगी मैं अदब और लिहाज़ से
नया कभी भी सीखा और शुरू किया जा सकता है
देखना है क्या क्या हो सकता है इस उम्रदराज़ से
मानी जिन्दगी भर औरों की चला उनके बताए रास्ते
अभी करूँगा अपनी फ़क्र नहीं किसी के एतराज़ से
बूढ़ा तन हो जाता है मन पर कभी बढ़ापा नहीं आता
करानी है सबकी अब मुलाक़ात अपने इस अंदाज से
जान कठपुतलियों में भी होती है डोर किसी और के हाथ
बहुत जल्द पर्दा उठ जाएगा इस कहानी और राज़ से
मुख्यातिब होना चाहता हूँ मैं गुस्ताखियों के रिवाज से
बहुत जी चूका हूँ जिन्दगी मैं अदब और लिहाज़ से
नया कभी भी सीखा और शुरू किया जा सकता है
देखना है क्या क्या हो सकता है इस उम्रदराज़ से

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



GULAB SITAB



घुट घुट के मर जाते हैं लोग हवा के बगौर
 हर घर में दो चार खिड़कियाँ होनी चाहिए
 सिखाती हैं ज़िन्दगी को सबक़ क़दम क़दम
 हर घर में दो चार कठपुतलियाँ होनी चाहिए
 ज़िन्दगी जीने की चाह मिलती है उनसे हमें
 हर घर में दो चार तितलियाँ होनी चाहिए
 होती तो रिश्ते होते, प्यार, अहसास होता
 हर घर में ज़र्सर दो चार बेटियाँ होनी चाहिए
 किताबें हों तो तन्हाई नहीं रहती किसी घर में
 हर घर में दो चार अलमारियाँ होनी चाहिए
 थक कर शाम को घर आएँ तो आराम करने
 हर घर में दो चार चारपाइयाँ होनी चाहिए
 घुट घुट के मर जाते हैं लोग हवा के बगौर
 हर घर में दो चार खिड़कियाँ होनी चाहिए
 सिखाती हैं ज़िन्दगी को सबक़ क़दम क़दम
 हर घर में दो चार कठपुतलियाँ होनी चाहिए

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
 - विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM



GULAB SHAKAB



जिन्दगी में हम सब कठपुतलियाँ रिश्ते धागे हैं
चलते हैं रिश्तों के साथ साथ सोते और जागे हैं

रिश्ते जैसे जैसे हमें चलाते हम बस चलते जाते
जिन्दगी की राह पर चलते रिश्ते निभाते निभाते
सीख कोई नई रिश्ते रोज़ ही हमें देकर हैं जाते
पास वालों को क़दर नहीं दूर वाले हमें बुलाते

बनाना है आसान रिश्ते पर निभाना मुश्किल है
रिश्ते संभाल के रखते जो रिश्तों के क़ाबिल है

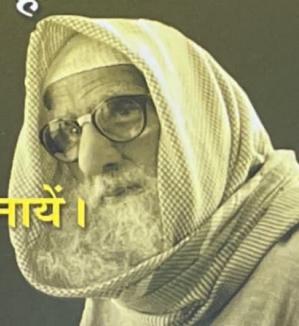
सख दुख, हँसी मज़ाक, रिश्ते के पहलू हैं कई
जोड़े रखने को चुभना पड़ता यहाँ बनकर सुई

रिश्ते लेकर हम पैदा होते कछ यहाँ बनाते हैं
जिनको नहीं मिलते रिश्ते वो बहुत अभागे हैं

जिन्दगी में हम सब कठपुतलियाँ रिश्ते धागे हैं
चलते हैं रिश्तों के साथ साथ सोते और जागे हैं

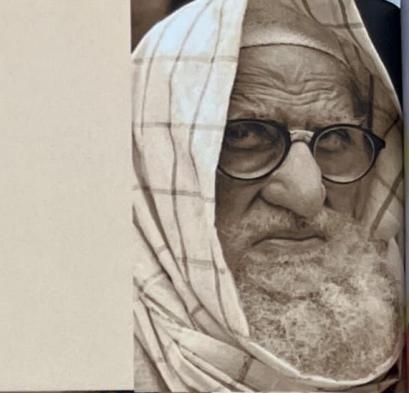
गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



GULAB SHAKBO

मुल्ला जी, मुल्ला जी, मुल्ला जी,
 क्या गुल खिलाएँगे अब मुल्ला जी,
 लखनऊ की सड़कों पर नज़र आएँगे मुल्ला जी
 देखना है अब क्या गुल खिलाएँगे मुल्ला जी
 चोर बाज़ार गए हैं मुल्ला जी
 किसी चोर को पकड़ा है या
 फिर कुछ चुराएँगे मुल्ला जी
 धूम रहे हैं नदी किनारे ठंडी हवा खाएँगे मुल्ला जी
 देखना है अब क्या गुल खिलाएँगे मुल्ला जी
 ढेले वाले से करते बात मुल्ला जी
 करते हैं वो ई रिक्शा की सवारी
 टूटी चप्पल जुड़वाएँगे मुल्ला जी
 लाए हैं कपड़ा, धागा, कठतली बनाएँगे मुल्ला जी
 देखना है अब क्या गुल खिलाएँगे मुल्ला जी
 क्या रिश्ता गुलाबो सिताबो से मुल्ला जी
 क्या नाच दिखाओगे गुलाबो सिताबो का
 क्या इस खेल से पैसे कमाएँगे मुल्ला जी
 मोटी नाक, बड़ी आँख नज़र अब आएँगे मल्ला जी
 देखना है अब क्या गुल खिलाएँगे मुल्ला जी
 छोटी बातों में ख़शियाँ मुल्ला जी
 ज़िन्दगी अपने हिंसाब से जीते
 पाठ ज़िन्दगी के पढ़ाएँगे मुल्ला जी
 देखेंगे जब हम इन्हें करेंगे प्यार इनसे मल्ला जी
 बरसों से कर रहे राज़, दिल पर छा जाएँगे मुल्ला जी
 मुल्ला जी, मुल्ला जी, मुल्ला जी,
 क्या गुल खिलाएँगे अब मुल्ला जी,
 गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
 - विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM





GULAB SYTAB

तरह तरह के फूल हैं यहाँ, जीवन हसीन लम्हों का बगीचा सा है
मेहनत कर कर के चलाई है ज़िन्दगी, पसीने से सिंचा सा है

हम सब कठपलियाँ ऊपर वाला नचा रहा सबको अपने हिसाब से
ग़म भी है और आसूँ, हँसी मज़ाक भी जैसे सुना कोई लतीफ़ा सा है

उम्र के जिस पढ़ाव पर आ गई ज़िन्दगी कि तजरबे मिले बहुत
बहुत कुछ करना है ज़िन्दगी में अभी अभी तो मिला वज़ीफ़ा सा है
रिश्तों में कड़वाहट अच्छी नहीं, रिश्ते खामोश अच्छे नहीं लगते
चलो मिलकर मना लें उसे आज हम सब जो हमसे ख़फ़ा सा है

परिवार बनता है परिवार वालों से तो बनाना है परिवार अब
सकूँ मिलेगा ज़िन्दगी को जैसे घास का नरम ग़लीचा सा है

तरह तरह के फूल हैं यहाँ, जीवन हसीन लम्हों का बगीचा सा है
मेहनत कर कर के चलाई है ज़िन्दगी, पसीने से सिंचा सा है

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTEAM



GULABO SIKABO

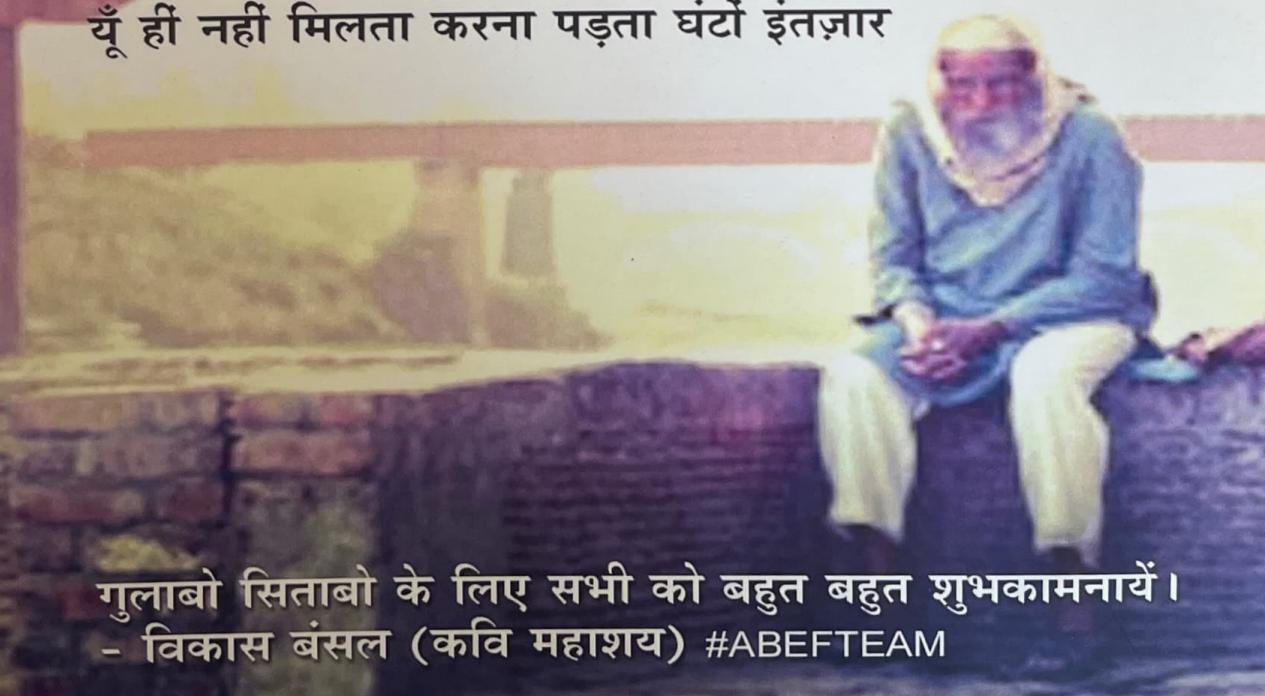
उम्रदराज दरख्त भी साया देता है जिन्दगी भर ये सोच बहुत है
मुड़ चुकी, झुक चुकी कमर बढ़ापे पर तजुरबों का बोझ बहुत है
कुछ भी कर जाता, हद से गुज़र जाता बच्चों की खुशी सा बड़ा कुछ नहीं
आराम कहाँ, भागती दौड़ती ज़िन्दगी घुटनों के अंदर चोट बहुत है
कछ चीज़ें जितनी परानी हो जाएँ उतना अच्छा साथ निभा कर जाती
पुराने घरों गिराता है कौन, मज़बूत दीवारों की भी ओट बहुत है
कछ भी उस काले टिके में दम तो था डरता था ज़माना उससे
निंकलते काम को, होते सफल बुजुर्गों का आशीर्वाद रोज़ बहुत है
हम हैं नहीं बड़े फिर भी खुद को बड़ा समझते हैं और गलतियाँ करते
बुजुर्गों को बड़ा मनाना बर्दाश्त नहीं मन में हमारे सकोच बहुत है
उम्रदराज दरख्त भी साया देता है जिन्दगी भर ये सोच बहुत है
मुड़ चुकी, झुक चुकी कमर बढ़ापे पर तजुरबों का बोझ बहुत है

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



कुछ सुबहें

लेकर आती बीते कल की शक्लें और किरदार
 यूँ हीं नहीं मिलता करना पड़ता घंटों इंतज़ार
 और फिर वो ही चेहरे इर्द गिर्द और कछ संवाद
 जब कुछ खुद पकाया हो तो बेहतर होता स्वाद
 जीना ज़िन्दगी का पहलूओं को बदल बदल कर
 चलना नए नए रास्तों पर हमारा सँभल सँभल कर
 वो रोज़ रोज़ नए किरदारों से होती जब मुलाक़ातें
 कुछ हम नहीं समझते, वो नहीं समझते हमारी बातें
 होते होते शाम जैसे यहाँ सब कुछ बदल जाता है
 सूरज की तपन से मिलती राहत चाँद निकल जाता है
 दिया साथ सबने मिलजुल कर मिलता रहा प्यार
 कर देता हूँ शुक्रिया सबका करता हूँ ये इज़हार
 लेकर आती बीते कल की शक्लें और किरदार
 यूँ हीं नहीं मिलता करना पड़ता घंटों इंतज़ार



गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
 - विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



बचपन भूल बैठे, रंग बिरंगे गुब्बारे भूला बैठे
अपनो से नाराज़ हम, बड़ा सा मुँह फूला बैठे
नोंक झोंक ज़िन्दगी में माना ज़र्स्वी है बहुत
पर हरकतों से अपनी हम दुनियाँ हिला बैठे

बात, बात में बात निकालने लगे हैं हम आज
खुशमिज्जाज ज़िन्दगी, हम दे क्या सिला बैठे

कोई आए मानने तो मानते नहीं बस राह तकते
अकेले, अेकेल हैं बस हाथों में लिए गिला बैठे

तूफानों से दोस्ती सी हो गई रोज़ आते रहते
खत्म न होने वाला लेकर हम आज मसला बैठे

खुद तो कुछ कहने की हिम्मत थी नहीं हमारी
कठपुतलियों को सामने उनके हम झुला बैठे

उम्रदराज़ होना लाज़मी है पर अरमान कम न हों
खूसट सी हो गई ज़िन्दगी, खुशी सब भूला बैठे

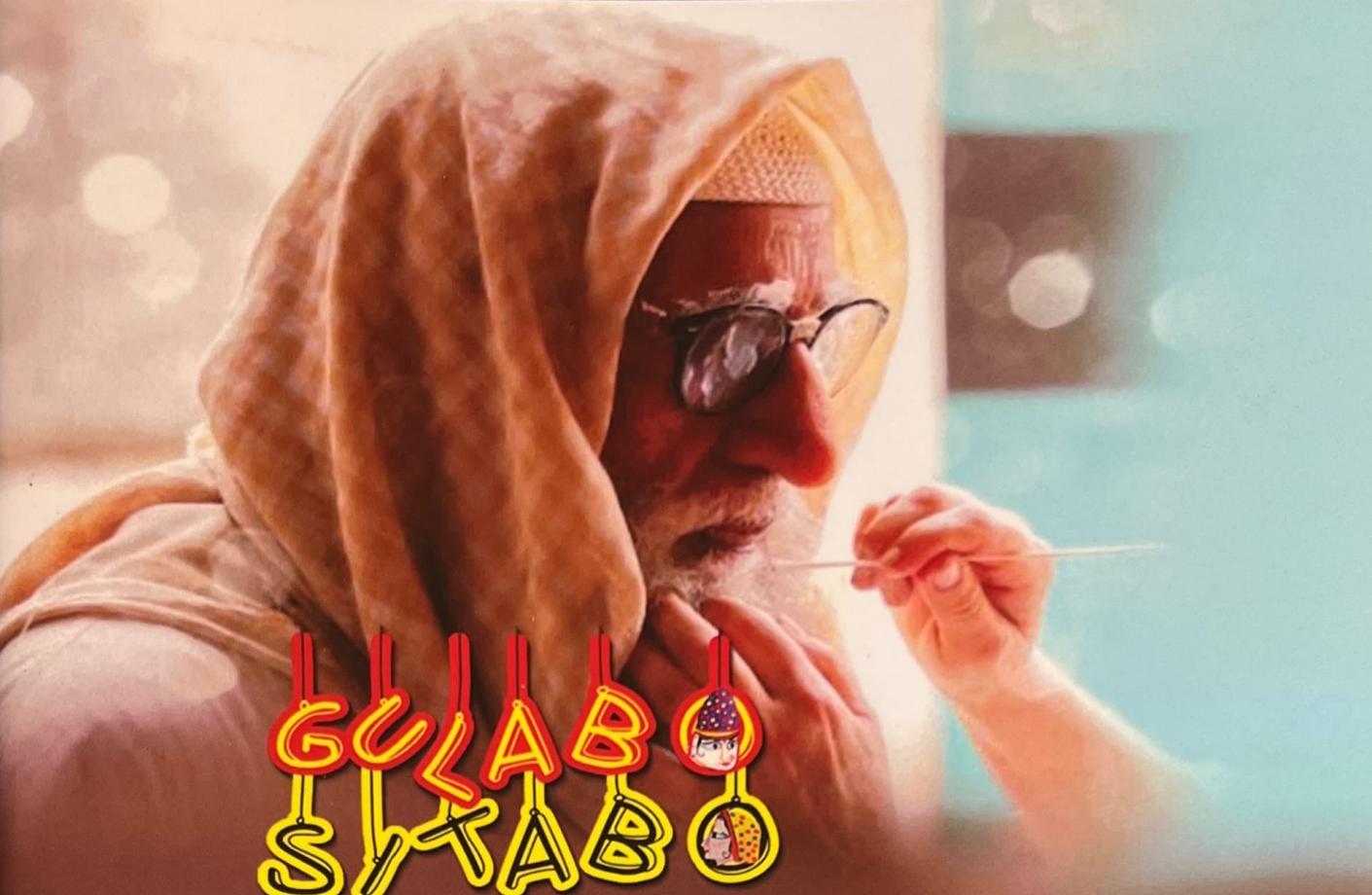
बचपन भूल बैठे, रंग बिरंगे गुब्बारे भूला बैठे
अपनो से नाराज़ हम, बड़ा सा मुँह फूला बैठे

नोंक झोंक ज़िन्दगी में माना ज़र्स्वी है बहुत
पर हरकतों से अपनी हम दुनियाँ हिला बैठे



गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM





GULAB SHAKAB

कभी अच्छे, कभी बरे, कभी बड़े अजीब से
रिश्ते हैं साहब, थामीएँ इन्हें ज़रा तमीज़ से
दूर रहे तो बातें बहुत अच्छी अच्छी होती रही
कड़वा हो गया मुँह का स्वाद देखा क़रीब से
बनाना है तो दोस्त बनाओ जो हाथ तुम्हारे है
रिश्ते तो बना बना के लाए हो तुम नसीब से
रिश्तों से तो बचना ममकीन नहीं है यहाँ पर
बचना है तो बचो आँस्तीनों में छिपे रक्कीब से
हँसी खुशी कट्टी रही ज़िन्दगी बस ये तमन्ना
ये लखनऊ है साहब रहिए थोड़ा तहज़ीब से
गवाह है दुनियाँ इंसान काम आया है इंसान के
सोच समझकर बोलना बचना कड़वी जीभ से
कभी अच्छे, कभी बरे, कभी बड़े अजीब से
रिश्ते हैं साहब, थामीएँ इन्हें ज़रा तमीज़ से
दूर रहे तो बातें बहुत अच्छी अच्छी होती रही
कड़वा हो गया मुँह का स्वाद देखा क़रीब से
गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM

GULABO SUKABO



ज़िन्दगी को समझना मुश्किल
कहाँ इसकी कोई परिभाषा है

किरदार बदलते, उठता पर्दा
फिर रोज़ नया होता तमाशा है

पत्थर पत्थर चुनके बनाया आशियाँ
बड़ी मेहनत से इसे हमर्में तराशा है

होगा सब कछ न कर तू फ़िक्र
अभी हमर्में ज़िन्दगी से बहुत आशा है

आवेग, आवेश करता सब कछ तबाह
कभी सकूँ देती ख़ामोशी वो भाषा है

रिश्ते तो रिश्ते ही होते हैं सब कछ
सबसे हौसला मिलता, मिलती दिलासा है

समझ समझ का फेर है ज़िन्दगी बस
तेरी समझ, मेरी समझ फ़क्र क़ज़रा सा है

फ़ुरसत मिलते ही याद आते हैं वो सब
तभी दिल आज मेरा भरा भरा सा है

ज़िन्दगी को समझना मुश्किल
कहाँ इसकी कोई परिभाषा है

किरदार बदलते, उठता पर्दा
फिर रोज़ नया होता तमाशा है

गुलाबो सिताबो के लिए सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।
- विकास बंसल (कवि महाशय) #ABEFTTEAM



गुलाबो सिताबो के लिये बहुत बहुत शुभकामनायें।

Ef Vikas Bansal
ABEFTeam

1939 Sector 28 Opp. Shiv Shakti Mandir, Faridabad 121008 Haryana
Mobile 9873555289, 9810955586 Twitter : @VikasbansalEF
E.mail : micky.bansal75@gmail.com